अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : बारहवीं– जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 08 जनवरी, 2023)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1 = (15)

(i) वर्तमान में कितने संहनन मिलते हैं-
(क) 4 (ख) 6
(ग) 1 (घ) 3 (ग)

(ii) सप्रदेशी-अप्रदेशी में शाश्वत बोलों में भंग पाये जाते हैं-
(क) 1,2,3 (ख) 2,3,4
(ग) 4,5,6 (घ) 1,5,6 (घ)

(iii) जघन्य 3 भव, उत्कृष्ट 5 भव के गमे होते हैं-
(क) 10 (ख) 12
(ग) 09 (घ) 07 (ख)

(iv) आयुष्य का नाणत्ता अवश्य पड़ता है-
(क) जघन्य गमे से (ख) उत्कृष्ट से
(ग) दोनों में (घ) दोनों में नहीं (ग)

(v) अवधिज्ञान से जाना जाता है-
(क) रूपी पदार्थ (ख) अरूपी
(ग) दोनों (घ) दोनों नहीं (क)

(vi) एक हाथ क्षेत्र को जानने वाला काल से जानता है-
(क) एक आवलिका (ख) अन्तर्मुहूर्त्त
(ग) एक दिन (घ) दिवस पृथक्त्व (ख)

(vii) महास्वप्न कितने हैं-
(क) 72 (ख) 42
(ग) 30 (घ) 70 (ग)

(viii) मांडलिक राजा की माता स्वप्न देखती है-
(क) 14 (ख) 7
(ग) 4 (घ) 1 (घ)

(ix) छठे आरे में पसलियाँ होती हैं-
(क) 16 (ख) 8
(ग) 32 (घ) 64 (ख)

(x) पहले आरे में युवावस्था मानी जाती है-
(क) 49 दिन (ख) 64 दिन
(ग) 32 साल (घ) 8 साल (क)

(xi) संयत मनुष्य में एक जीव की अपेक्षा भंग पाये जाते हैं-
(क) 1,5,6 (ख) 1 से 6
(ग) 1,2 (घ) 1,3,4 (ग)

(xii) नारकी में कषाय शाश्वत है-
(क) लोभ (ख) मान
(ग) माया (घ) क्रोध (घ)

(xiii) देवता में कषाय शाश्वत है-
(क) लोभ (ख) माया
(ग) क्रोध (घ) मान (क)

(xiv) आगति स्थान हैं-
(क) 48 (ख) 321
(ग) 16 (घ) 44 (ख)

(xv) जीव के 48 भेदों में तिर्यंच पंचेन्द्रिय के भेद हैं-
(क) 7 (ख) 4
(ग) 3 (घ) 5 (ग)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 15x1=(15)

(i) औदारिक के 14 जीवों में मनुष्य के सन्नी-असन्नी दो भेद लिये हैं। (नहीं)

(ii) औदारिक के 10 घरों में मनुष्य के 3 घर हैं। (नहीं)

(iii) औदारिक जीवों के वैक्रिय के घरों में आने के 715 नाणत्ता हैं। (हाँ)

(iv) चौथे गमे का नाम जघन्य-जघन्य है। (नहीं)

(v) एक योजन क्षेत्र को जानने वाला काल से दिवस पृथक्त्व को जानता है। (हाँ)

(vi) धूम प्रभा के नारकों को जघन्य दो कोस उत्कृष्ट तीन कोस अवधिज्ञान होता है। (नहीं)

(vii) जघन्य अवधिज्ञान का संस्थान तप्राकार होता है। (नहीं)

(viii) वैमानिक देव अधोलोक में अधिक देखते हैं। (हाँ)

(ix) 14 महास्वप्नों में 11 वाँ स्वप्न क्षीर-समुद्र है। (हाँ)

(x) प्रतिवासुदेव की माता 14 स्वप्नों से कोई तीन स्वप्न देखती है। (हाँ)

(xi) दूसरे आरे में मनुष्य नगरों में वास करते हैं। (नहीं)

(xii) चौथे आरे में सभी संस्थान होते हैं। (हाँ)

(xiii) अहारक शरीरी मनुष्य अशाश्वत होते हैं। (हाँ)

(xiv) सज्ञानी तीन विकलेन्द्रिय बहुत जीवों की अपेक्षा तीन ही भंग पाये जाते हैं। (नहीं)

(xv) सकषायी एकेन्द्रिय बहुत जीवों की अपेक्षा एक छठा ही भंग होता है। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्त स्थान में लिखिए:- 15x1=(15)

(i)	जघन्य 2 भव, उत्कृष्ट 8 भव के गमे	(क) 2	1646
(ii)	जघन्य 2 भव, उत्कृष्ट 6 भव के गमे	(ख) तीन समय का आहारक सूक्ष्मपनक जीव की अवगाहना	51
(iii)	पाँच अनुत्तर विमान के घर	(ग) देशोन पल्योपम	2
(iv)	तेइन्द्रिय की आयु	(घ) यथातथ्य	49 अहोरात्रि
(v)	असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय पहली नरक में उत्कृष्ट आयु पाता है।	(च) उपजाऊ धरती	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग
(vi)	अवधिज्ञान का जघन्य क्षेत्र	(छ) दुःखमा	तीन समय का आहारक सूक्ष्मपनक जीव की अवगाहना
(vii)	सम्पूर्ण लोक को जानने वाला कितने काल को जानता है।	(ज) 1646	देशोन पल्योपम
(viii)	अनुत्तरोपपातिक देव का अवधिज्ञान	(झ) 49 अहोरात्रि	सम्पूर्ण लोक
(ix)	पहले स्वप्न का प्रकार	(य) 51	यथातथ्य
(x)	चौथे आरे में धरती की सरसता	(र) सम्पूर्ण लोक	उपजाऊ धरती
(xi)	एक कालचक्र	(ल) 10	20 कोटाकोटि सागरोपम
(xii)	तीसरे आरे में आहार	(व) 404	आंवले बराबर
(xiii)	पाँचवें आरे का नाम	(क्ष) 20 कोटाकोटि सागरोपम	दुःखमा
(xiv)	वैक्रिय जीवों के औदारिक घरो में आने के नाणत्ते	(त्र) पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग	404
(xv)	औदारिक के कुल घर	(ज्ञ) आंवले बराबर	10

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1=(15)

(i)	मेरे 26 भेद हैं, परन्तु घर एक ही है।	वाणव्यन्तर देव
(ii)	मेरे घर में आने के 101 आगति स्थान हैं।	वैक्रिय
(iii)	मैं मरकर वैक्रिय के केवल 12 घरों में ही आता हूँ।	असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय
(iv)	मुझसे निकला जीव नियमा मोक्ष जाता है।	सर्वार्थ सिद्ध
(v)	मुझे देखने वाला काल से अर्द्धमास तक को जानता है।	भरत क्षेत्र
(vi)	मेरे अन्दर आल जंजाल दिखाई देता है।	अव्यक्त स्वप्न
(vii)	पहले स्वप्न में माता मुझे मुख में प्रवेश करते देखती है।	हाथी
(viii)	मेरे अन्दर फूलों की माला दिखाई देती है।	पाँचवाँ स्वप्न
(ix)	जब मैं गर्भ में आता हूँ तो मेरी माँ धुंधले 14 स्वप्न देखती है।	चक्रवर्ती
(x)	मेरा कालमान दो कोटाकोटि सागरोपम है।	तीसरा आरा
(xi)	मेरे अन्दर मनुष्य की अवगाहना एक हाथ होती है।	छठा आरा
(xii)	6 आरे का थोकड़ा मुझमें से लिया गया है।	जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति दूसरा वक्षस्कार
(xiii)	मेरे अन्दर एक अन्तिम छठा भंग पाया जाता है।	एकेन्द्रिय
(xiv)	मैं देव होते हुए भी मेरे नाणत्ता नहीं होते हैं।	सर्वार्थ सिद्ध
(xv)	हम उत्तर वैक्रिय करें तो भी हमारा संस्थान हुण्डक ही रहता है।	नारकी के जीव

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए- 8x2=(16)

(i) सप्रदेशी-अप्रदेशी के 6 भंगों के नाम लिखिए।

1. सिय सप्रदेशी 2. सिय अप्रदेशी 3. सप्रदेशी एक अप्रदेशी एक
4. सप्रदेशी एक अप्रदेशी बहुत 5. सप्रदेशी बहुत अप्रदेशी एक 6. सप्रदेशी बहुत अप्रदेशी बहुत

(ii) महाविदेह क्षेत्र में कैसी अवस्था (भाव) रहती है ?

महाविदेह क्षेत्र में सदैव अवसर्पिणी काल के चौथे आरे अथवा उत्सर्पिणी काल के तीसरे तथा चौथा आरा लगते समय जैसे भाव होते हैं, वैसे ही भाव समझना।

(iii) 6 आरों में मनुष्य की अवगाहना लिखिए।

	1	2	3	4	5	6
मनुष्य	3 गाउ (कोस)	2 गाउ(कोस)	1 गाउ	500 धनुष	7 हाथ	1 हाथ

(iv) मोक्ष प्राप्ति के सूचक स्वप्नों में से तीसरा स्वप्न लिखिए।

किसी स्त्री या पुरुष को ऐसे स्वप्न आवे कि लोकांत तक पूर्व से पश्चिम लम्बी रस्सी को उसने काट डाला है तो समझना चाहिए कि वह उसी भव में मोक्ष जाएगा।

(v) भगवान महावीर द्वारा देखे गये स्वप्नों में दसवें स्वप्न का क्या फल बताया है ?

भगवान महावीर स्वामी ने केवलज्ञानी होकर बारह प्रकार की परिषद् में बैठ कर धर्मोपदेश फरमाया।

(vi) सम्बद्ध अवधिज्ञान किसे कहते हैं ?

जिस अवधिज्ञान के द्वारा जीव जितने क्षेत्र के रूपी पदार्थों को बिना अन्तर के लगातार जानता है, उसे सम्बद्ध अवधिज्ञान कहते हैं।

(vii) असुरकुमारों का जघन्य-उत्कृष्ट अवधिज्ञान कितना होता है ?

जघन्य 25 योजन और उत्कृष्ट असंख्यात द्वीप-समुद्रों को जानने वाला।

(viii) नाणत्ता किसे कहते हैं, कुल कितने हैं ?

औघिक गमों की लब्धि से जघन्य और उत्कृष्ट गमों की लब्धि में जो नानापन-विविधता-अंतर होता है, उसे नाणत्ता कहते हैं। ये कुल 1998 होते हैं।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 8x3 = (24)

(i) सप्रदेशी-अप्रदेशी के 14 द्वारों के नाम लिखिए।

1. सप्रदेश-अप्रदेश द्वार	2. आहारक द्वार	3. भव्य द्वार	4. संज्ञी द्वार
5. लेश्या द्वार	6. दृष्टि द्वार	7. संयत द्वार	8. कषाय द्वार
9. ज्ञान द्वार	10. योग द्वार	11. उपयोग द्वार	12. वेद द्वार
13. शरीर द्वार	14. पर्याप्ति द्वार		

(ii) लब्धि 20 द्वारों में से पहले 10 द्वारों के नाम लिखिए।

1. उपपात	2. परिमाण	3. संहनन	4. अवगाहना	5. संस्थान
6. लेश्या	7. दृष्टि	8. ज्ञान	9. योग	10. उपयोग

(iii) 16 वाँ भवस्थान पूर्ण लिखिए।

संख्यात वर्षायुष्क सन्नी मनुष्य, असन्नी मनुष्य मरकर औदारिक के 2 घरों (तेउकाय,वायुकाय) में आते हैं।

कितनी स्थिति से आवे- स्थान प्रमाण।

कितनी स्थिति पावे- स्थान प्रमाण।

कितने भव करें- जघन्य उत्कृष्ट के बिना 2 भव।

आगति स्थान- 2 x 2 = 4

गमा- 1 x 2 x 3 = 6 तथा 1 x 2 x 9 = 18 अर्थात् कुल 6+18 =24

(iv) कौन-कौन से भवस्थान में कितने-कितने अशुद्ध (टूटे) गमे बनते हैं ?

भवस्थान	टूटे गमे
8	6+6 = 12
10	2 x 3 x 2 = 12
14	1 x 1 x 6 = 6
15	1 x 7 x 6 = 42
16	1 x 2 x 6 = 12
	कुल 84 गमे।

(v) गमा शब्द का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

'गमा' शब्द संस्कृत की गम् धातु से बना है जिसका अर्थ है 'जाना अथवा जानना'। वस्तु तत्त्व को जानने का उपाय या तरीका 'गमा' कहलाता है। कोई भी संसारी जीव जब एक गति से दूसरी में अथवा एक भव से दूसरे भव में जाता है, तो उसकी कैसी स्थिति होती है, उस जीव में क्या-क्या विशेषताएँ होती हैं, उन्हें जानना भी गमा कहलाता है।

(vi) नो गमों का नामोल्लेख कीजिए।

1. औघिक-औघिक	2. औघिक-जघन्य	3. औघिक-उत्कृष्ट
4. जघन्य-औघिक	5. जघन्य-जघन्य	6. जघन्य-उत्कृष्ट
7. उत्कृष्ट-औघिक	8. उत्कृष्ट-जघन्य	9. उत्कृष्ट-उत्कृष्ट

(vii) पृथ्वी, पानी, वनस्पति के आगति स्थान कितने व कैसे बनते हैं ?

10 भवनपति, 1 व्यंतर, 1 ज्योतिषी, पहला व दूसरा देवलोक ऐसे वैक्रिय के 14 जीव तथा 5 स्थावर, 3 विकलेन्द्रिय, असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय, संख्यात वर्षायुष्क, सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय, असन्नी मनुष्य, संख्यात वर्षायुष्क सन्नी मनुष्य ऐसे औदारिक के 12 जीव।

वैक्रिय के 14 + औदारिक के 12 = 26 जीव x 3 घर = 78 कुल आगति स्थान होते हैं।

(viii) उत्सर्पिणी काल में धर्म का पालन अधिक होता है ? समझाइए।

अवसर्पिणी काल	उत्सर्पिणी काल
तीसरा आरा- 1 लाख पूर्व	1 कोडाकोडी में 42 हजार वर्ष कम
चौथा आरा- 1 कोडाकोडी में 42 हजार वर्ष कम	84 लाख वर्ष (पूर्व)
पाँचवाँ आरा- 21 हजार वर्ष	

लगभग 83 लाख पूर्व (21 हजार वर्ष कम) तक धर्माराधना उत्सर्पिणी काल में अधिक रहती है।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : बारहवीं – जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 11 जनवरी, 2022)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1 = (15)

(a) प्रतिवासुदेव का जीव गर्भ में आता है, तब उसकी माता स्वप्न देखती है-
(क) 17 (ख) 07
(ग) 04 (घ) 03 (घ)

(b) अवसर्पिणी काल के पाँचवें आरे में किसका आहार होता है-
(क) फल-फूल (ख) अन्नाहार
(ग) तुच्छाचार (घ) मांसाहार (ग)

(c) सप्रदेशी-अप्रदेशी थोकड़े का अधिकार चलता है-
(क) प्रज्ञापना (ख) अनुयोग द्वार
(ग) भगवती सूत्र (घ) जीवाजीवाभिगम (ग)

(d) काय योगी पृथ्वीकाय जीव में बहुत जीव की अपेक्षा भंग पाया जाता है-
(क) पहला (ख) पहला-दूसरा
(ग) छठा (घ) पाँचवाँ-छठा (ग)

(e) देवता का उत्कृष्ट अवधिज्ञान होता है-
(क) सम्पूर्ण लोक (ख) सम्पूर्ण त्रस नाड़ी
(ग) भरत क्षेत्र (घ) सम्पूर्ण जम्बू द्वीप (ख)

(f) अन्तर्मुहूर्त्त की स्थिति वाला पर्याप्तक सन्नी तिर्यंच देवताओं में उत्कृष्ट स्थिति में उत्पन्न होता है-
(क) 33 सागरोपम (ख) पल का असंख्यातवाँ भाग
(ग) 2 सागरोपम (घ) 18 सागरोपम (घ)

(g) भगवान महावीर ने आठवाँ स्वप्न देखा था-
(क) अति तेज युक्त सूर्य को (ख) पद्म सरोवर को
(ग) अगाध समुद्र को (घ) महेन्द्र ध्वजा को (क)

(h) चौथी नारकी में संहनन वाले नहीं जाते हैं-
(क) वज्रऋषभनाराच (ख) सेवार्त्तक
(ग) ऋषभ नाराच (घ) नाराच (ख)

(i) असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय मरकर वैक्रिय के 12 घरों में आता है, तो उत्कृष्ट स्थिति पाता है
(क) 10 हजार वर्ष (ख) 1 पल्योपम
(ग) पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग (घ) 2 सागरोपम (ग)

(j) ज्योतिषी देवों की उत्कृष्ट स्थिति है-
(क) एक पल्योपम (ख) पाव पल्योपम झाझेरी
(ग) एक पल्योपम एक लाख वर्ष (घ) दो सागरोपम (ग)

(k) मनुष्य युगलिक की जघन्य अवगाहना है-
(क) 1000 धनुष झाझेरी (ख) 500 धनुष झाझेरी
(ग) पृथक्त्व धनुष (घ) पृथक्त्व अंगुल (ख)

(l) संख्यात वर्षायुष्क संज्ञी मनुष्य मरकर चार अनुत्तर में आवे तो उत्कृष्ट भव करता है-
(क) 6 भव (ख) 8 भव
(ग) 4 भव (घ) 5 भव (घ)

(m) पाँचवें भवस्थान के आगति स्थान हैं-
(क) 270 (ख) 22
(ग) 30 (घ) 90 (ख)

(n) असन्नी मनुष्य मरकर मनुष्य के घर में जघन्य गमों से भव करता है-
(क) जघन्य 2 उत्कृष्ट 8 (ख) जघन्य उत्कृष्ट के बिना 2

(ग) जघन्य 3, उत्कृष्ट 7 (घ) जघन्य उत्कृष्ट के बिना 3 (क)

(o) जीव के 48 भेदों में पंचेन्द्रिय जीव के भेद हैं-

(क) 36 (ख) 34

(ग) 40 (घ) 43 (ग)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 15x1=(15)

(a) तीर्थंकर की माता आठवें स्वप्न में कुम्भ कलश पूर्ण भरा हुआ देखती है। (नहीं)

(b) अवसर्पिणी काल के पहले आरे के लगते धरती की सरसता गुड़ जैसी मिठास भरी होती है। (नहीं)

(c) नारकी में क्रोध कषाय शाश्वत है। (हाँ)

(d) जिसको उत्पन्न हुए एक समय ही हुआ, उसे अप्रदेशी कहते हैं। (हाँ)

(e) आहार अपर्याप्ति अर्थात् बाटा बहता जीव की अनाहारक अवस्था है। (हाँ)

(f) तमतमः प्रभा के नारकों को उत्कृष्ट एक कोस प्रमाण अवधिज्ञान होता है। (हाँ)

(g) अवधिज्ञान क्षेत्र से एक हाथ प्रमाण जानने वाला काल से अन्तर्मुहूर्त्त प्रमाण जानता है। (हाँ)

(h) अवसर्पिणी काल का तीसरा आरा दो कोटाकोटी सागर का होता है। (हाँ)

(i) आहारक शरीरी मनुष्य अशाश्वत होते हैं। (हाँ)

(j) वैमानिक देव अवधिज्ञान से तिर्यक् लोक में अधिक देखते हैं। (नहीं)

(k) सम्यग्दृष्टि युगलिक नियमा आराधक ही होते हैं। (हाँ)

(l) पृथक्त्व मास की स्थिति में मनुष्य को आहारक समुद्घात की प्राप्ति नहीं हो पाती है। (हाँ)

(m) असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय काल करके पहले देवलोक में 2 सागरोपम की उत्कृष्ट स्थिति पाता है। (नहीं)

(n) पुरुषवेदी, स्त्रीवेदी अपर्याप्त अवस्था में काल नहीं करते हैं। (हाँ)

(o) औघिक गमा का तात्पर्य जीव की जघन्य से लेकर उत्कृष्ट स्थिति से हैं। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- 15x1=(15)

(a)	चौथे आरे में पसलियाँ	(क) 34	32
(b)	दूसरे आरे में युवावस्था(दिनों में)	(ख)128	64
(c)	प्रथम आरे में गति	(ग) 84	128
(d)	जघन्य अवधिज्ञान का संस्थान	(घ) यवनालिका	स्तिबुकाकार
(e)	अनुत्तर विमान देव के अवधिज्ञान का संस्थान	(च) 32	यवनालिका
(f)	नारक जीवों के अवधिज्ञान का संस्थान	(छ) जघन्य-औघिक	तप्राकार
(g)	वैक्रिय के घर	(ज) 64	34
(h)	औदारिक के जीव के भेद	(झ) स्तिबुकाकार	14
(i)	असुर कुमार के घर में आने वाले जीव	(य)जघन्य-जघन्य	5
(j)	अशुद्ध गमा	(र) 39	84
(k)	जघन्य 2 भव उत्कृष्ट संख्यात भव के गमे	(ल) 1998	156
(l)	नाणत्ता	(व) 14	1998
(m)	पाँचवाँ गमा	(क्ष) तप्राकार	जघन्य-जघन्य
(n)	चौथा गमा	(त्र) 156	जघन्य-औघिक
(o)	त्रस जीवों के घर	(ज्ञ) 5	39

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1=(15)

(a) मैं यथातथ्य भी होता हूँ और अयथातथ्य भी होता हूँ। प्रतान स्वप्न

(b) मेरे कारण से वर्तमान काल को हुण्डा अवसर्पिणी काल कहते हैं। आश्चर्यों के कारण

(c) नो संयत नो असंयत नो संयतासंयता मुझे ही कहते हैं। सिद्ध

(d) मुझमें लोभ कषाय शाश्वत रूप से पायी जाती है। — देवता में

(e) मैं मन और इन्द्रियों की सहायता के बिना सीधे आत्मा से रूपी पदार्थों को जानता हूँ। — अवधिज्ञान

(f) मुझसे निकला मनुष्य नियमा मोक्ष जाता है। — सर्वार्थ सिद्ध

(g) मेरे लिए नियम है कि मैं अपनी स्थिति से ज्यादा स्थिति देवलोक में नहीं पाता। — युगलिक

(h) मैं पल्योपम के असंख्यातवें भाग मात्र उत्कृष्ट स्थिति आयु कर्म की बाँधता हूँ। — असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय

(i) वैक्रिय के घरों से निकलकर मैं कम से कम स्थिति पृथक्त्व मास तो पाता हूँ। — संज्ञी मनुष्य

(j) मैं देवलोक में भवनपति से आठवें देवलोक तक ही उत्पन्न हो सकता हूँ। — संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय

(k) मुझमें अप्रमत्त तथा आराधक संयमी ही उत्पन्न होते हैं। — पाँच अनुत्तर विमान

(l) मेरी अवगाहना जघन्य पृथक्त्व धनुष से लेकर उत्कृष्ट 6 गाउ तक हो सकती है। — तिर्यंच युगलिक

(m) मेरा नाणत्ता जघन्य उत्कृष्ट गमे से अवश्य पड़ता है। — आयुष्य/अनुबन्ध

(n) मेरी अवगाहना पृथक्त्व मास की स्थिति में पृथक्त्व अंगुल की होती है। — संख्यात वर्षायुष्क संज्ञी मनुष्य

(o) मैं जागृत अवस्था में जिन पदार्थों का विचार किया जाये, उन्हें देखने वाला स्वप्न हूँ। — चिन्ता-स्वप्न

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- **8x2=(16)**

(a) तीर्थंकर की माता द्वारा देखे गये पाँचवें स्वप्न का फल क्या है ?
पाँचवें स्वप्न में फूलों की माला देखती है। इसका फल यह है कि जिस प्रकार फूलों की माला की सुगंध दसों दिशाओं में फैलती है उसी तरह तीर्थंकर भगवान् का यश दसों दिशाओं में फैलता है।

(b) अनाहारक सिद्ध भगवान में बहुत जीव अपेक्षा सप्रदेश-अप्रदेश के भंग लिखिए।
1,5,6 भंग पाये जाते हैं।

(c) मनःपर्यवज्ञानी एक जीव अपेक्षा सप्रदेश-अप्रदेश के भंग लिखिए।
1,2 भंग पाता हैं।

(d) अवधिज्ञान का उत्कृष्ट क्षेत्र बताइए।
उत्कृष्ट क्षेत्र- सम्पूर्ण अग्निकायिक जीव जितने क्षेत्र को स्पर्श कर सके उतना अवधिज्ञान का उत्कृष्ट समझना चाहिए।

(e) मनोद्रव्य को जानने वाला अवधिज्ञान से क्षेत्र व काल की अपेक्षा कितना जानता है ?
मनोद्रव्य को जानने वाला अवधिज्ञान से क्षेत्र की अपेक्षा लोक के संख्यातवें भाग को तथा काल की अपेक्षा पल्योपम से संख्यातवें भाग को जानना है।

(f) सम्मूर्च्छिम मनुष्य की स्थिति विषयक (जघन्य-उत्कृष्ट) धारणा लिखिए।
सम्मूर्च्छिम मनुष्य की स्थिति जघन्य तथा उत्कृष्ट दोनों ही अन्तर्मुहूर्त होती हैं। जघन्य से उत्कृष्ट स्थिति विशेषाधिक (दुगुनी से कम) तक बड़ी हो सकती है, फिर भी सम्मूर्च्छिम मनुष्य की पूरी स्थिति को जघन्य ही माना जाता है।

(g) संख्यात वर्षायुष्क संज्ञी मनुष्य मरकर, वैक्रिय के 15 घरों में जाये तो जघन्य गमा से पड़ने वाले नाणत्ता लिखिए।
जघन्य गमा तीन, नाणत्ता पड़े पाँच-पाँच।
1. अवगाहना-पृथक्त्व अंगुल। 2. ज्ञान- तीन ज्ञान, तीन अज्ञान। 3. समुद्घात- प्रथम पाँच।
4. आयुष्य- पृथक्त्व मास। 5. अनुबन्ध- आयुवत्।

(h) तिर्यंच पंचेन्द्रिय में आने वाले बेइन्द्रिय का प्रथम तीन गमों से कालादेश लिखिए।
1. औघिक-औघिक-अन्तर्मुहूर्त्त, अन्तर्मुहूर्त्त। 48 वर्ष, 4 करोड़पूर्व।
2. औघिक-जघन्य-अन्तर्मुहूर्त्त, अन्तर्मुहूर्त्त। 48 वर्ष, 4 अन्तर्मुहूर्त्त।
3. औघिक-उत्कृष्ट-अन्तर्मुहूर्त्त, अन्तर्मुहूर्त्त। 48 वर्ष, 4 करोड़पूर्व।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 8x3=(24)

(a) उत्सर्पिणी काल में धर्म का पालन अधिक होता है, कारण सहित बताइए।
उत्सर्पिणी काल में धर्म का पालन अधिक समय तक रहता है। क्योंकि उत्सर्पिणी काल में 24वें तीर्थंकर के पूरे जीवन काल 84 लाख पूर्वों तक धर्म का पालन रहता है जबकि अवसर्पिणी काल में प्रथम तीर्थंकर के जीवन काल में 1 लाख पूर्व तथा अवसर्पिणी काल में पाँचवें आरे में 21 हजार वर्ष तक ही धर्म का पालन हो पाता है, इस अपेक्षा से लगभग 83 लाख पूर्वों तक धर्म का पालन उत्सर्पिणी काल से अधिक होता है।

(b) सप्रदेशी-अप्रदेशी के संख्या की अपेक्षा बनने वाले छह भंगों को लिखिए।
1.सिय सप्रदेशी। 2. सिय अप्रदेशी। 3. सप्रदेशी एक अप्रदेशी एक। 4. सप्रदेशी एक अप्रदेशी बहुत। 5. सप्रदेशी बहुत अप्रदेशी एक। 6. सप्रदेशी बहुत अप्रदेशी बहुत।

(c) मोक्ष प्राप्ति के सूचक स्वप्नों में से प्रथम दो स्वप्नों को लिखिए।
1. कोई स्त्री या पुरुष स्वप्न के अंत में हाथी, घोड़े यावत् बैल आदि की पंक्ति देखे, उसके ऊपर चढ़े, या अपने आपको उस पर चढ़ा हुआ माने, ऐसा देख कर तुरन्त जागृत होवे तो ऐसा समझना चाहिए कि वह व्यक्ति उसी भव में मोक्ष जाएगा यावत् सर्व दुःखों का अन्त करेगा।
2. कोई स्त्री या पुरुष स्वप्न के अंत में एक रस्सी को, जो समुद्र के पूर्व से पश्चिम तक लम्बी हो, अपने हाथों से समेटता हुआ (इकट्ठी करता हुआ) देखे तो समझना चाहिए कि वह व्यक्ति उसी भव में मोक्ष जाएगा।

(d) तैजस, कार्मण और भाषा वर्गणाओं को जानने वाला अवधिज्ञान से क्षेत्र व काल से कितना जानता है ?
तैजस, कार्मण और भाषा वर्गणाओं को जानने वाला अवधिज्ञान से क्षेत्र की अपेक्षा असंख्येय द्वीप-समुद्रों को तथा काल की अपेक्षा पल्योपम के असंख्यातवें भाग को जानता है। वह काल से भव पृथक्त्व अर्थात् दो से 9 भवों तक को जानता है।

(e) नवमाँ भवस्थान पूर्ण लिखिए।
संख्यात वर्षायुक्त संज्ञी मनुष्य मरकर सातवीं नरक के एक घर में आता है।

कितनी स्थिति से आवे-	जघन्य पृथक्त्व वर्ष, उत्कृष्ट करोड़पूर्व।
कितनी स्थिति पावे-	जघन्य 22 सागर, उत्कृष्ट 33 सागर।
कितनी भव करे-	जघन्य उत्कृष्ट के बिना 2 भव 1।
आगति स्थान-	1 x 1 = कुल 1
गमा-	1 x 1 x 9 = कुल 9

(f) संख्यात वर्षायुष्क संज्ञी मनुष्य मरकर मनुष्य के घर में आने पर कितने भव करता है ?
1,2,4,5,6,7,8वें गमे से जघन्य 2 उत्कृष्ट 8 भव।
3, 9वें गमे से जघन्य उत्कृष्ट के बिना 2 भव।

(g) असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय मरकर वैक्रिय के 12 घरों में आता है तब जघन्य और उत्कृष्ट गमों में पड़ने वाले नाणत्ता लिखिए।
जघन्य गमा तीन, नाणत्ता पड़े तीन-तीन।

1. आयु- अन्तर्मुहूर्त्त 2. अध्यवसाय- नरक में आने वाले के अशुभ, देवता में आने वाले के शुभ, 3. अनुबन्ध- आयु के समान अन्तर्मुहूर्त्त।
उत्कृष्ट गमा तीन, नाणत्ता पड़े दो-दो।
1. आयु- करोड़पूर्व 2. अनुबन्ध- आयुवत्।
इस प्रकार 1 x 12 x 5 = 60 नाणत्ता हुए।

(h) प्रथम नरक में आने वाले संख्यात वर्षायुष्क संज्ञी तिर्यंच का प्रथम 3 गमों का कालादेश लिखिए।
1. औघिक-औघिक-अन्तर्मुहूर्त्त, 10 हजार वर्ष। 4 करोड़पूर्व, 4 सागरोपम।
2. औघिक-जघन्य-अन्तर्मुहूर्त्त, 10 हजार वर्ष। 4 करोड़पूर्व, 40 हजार वर्ष।
3. औघिक-उत्कृष्ट-अन्तर्मुहूर्त्त, 1 सागरोपम। 4 करोड़पूर्व, 4 सागरोपम।